Assignment

Name - Safiya Parveen
Roll no. - SKT/19/32
Paper Name - Acting and Script Writing
Paper code - 12133901
Year - 2nd year (3rd sem)

प्र0 - आहार्य अभिनय के कितने प्रकार होते हैं तथा उनका संक्षिप्त विवरण दीजिए -

उ0 आहार्य अभिनय चार प्रकार के होते हैं - पुस्त, अलंकार, अंगरचना और संजीव।

आहार्य

पुस्त | अलंकार | अंगरचना | संजीव

1) पुस्त - रंगमंच पर सांकेतिक पदार्थों की योजना के लिए पुस्तविधि प्रयोग में लायी जाती है। इसमें सांकेतिक प्रतिकृति (मॉडल) बना कर रंगमंच पर रथ, पर्वत, वृक्ष नदी आदि पदार्थों और जीवों का सारूप्य निर्माण किया जाता है। इससे मंच सज्जा प्रभावी हो जाती है और अभिनय वस्तु के लिए उपयुक्त देश, काल एवं वातावरण के निर्माण में सहायता मिलती है।

Scanned by TapScanner

पुस्तविधि तीन प्रकार की है -(क) संधिम ,(ख) व्याजिम ,(ग) वेष्टिम ।

(क) सन्धिम - सन्धिम का अभिप्राय है दो वस्तुओं के सन्धान अर्थात जोड़ कर या बाँध कर बनाई गई सामग्री । बाँस , चटाई , कपड़े आदि को जोड़कर या बाँधकर पत्थर , शिला , विमान रथ आदि को सन्धिम पुस्त के माध्यम से रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

(ख) व्याजिम - क्षेप क्रिया से सम्पन्न विधि व्याजिम कहलाती है। क्षेप का अर्थ है - क्षेपण , धक्का देना , फेंकना आदि । व्याजिम में व्याज का अर्थ है - धागे आदि को खींचना । स्वाभाविक गति न होने पर धागे , डोरी या यान्त्रिक साधन द्वारा प्रकारान्तर से कृत्रिम गति प्रदर्शित करना।

(ग) वेष्टिम - वेष्टिम का सम्बन्ध वेष्टन क्रिया से है। वेष्टन का अर्थ है - लपेटना । वेष्टन विधि से उपस्थित की गई आहार्य सामग्री वेष्टिम पुस्त के अंतर्गत समाविष्ट है। अभिनय के उपयोग में आने वाली कोई आकृति या ढाँचे को भूसे , घास , खप्पचियों की सहायता से बनाकर उसे सम्यक आकार प्रदान किया जाता है जिससे वह ढाँचा किसी वस्तु या प्राणी की हूबहू प्रतिकृति सा लगता है । इस प्रकार यथार्थ

Scanned by TapScanner

रूप से जो सामग्री मंच पर प्रस्तुत नही की जा सकती है, उसे वाष्टिम विधि द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

2). अलंकार - अलंकारविधि में शारीरिक अंगो और उपांगो में धारण किए जाने योग्य विविध प्रकार के आभूषण, वस्त्र तथा केशविन्यास आदि की योजना की जाती है।

अलंकारस्तु विज्ञेयो माल्याभरणवाससा।
नानाविध: समायोगोऽप्यङ्गोपाङ्गावीधि: स्मृत: ।।

मस्तक, शीर्ष, हाथ, पैर आदि अंगों में धारण किए जाने वाले ललाट, अंगुलि आदि उपांगो मे धारण किए जाने योग्य आभूषण अलंकार कहे जाते हैं। सामान्यत अलंकार तीन प्रकार के होते हैं -(क) पुष्पमाल्य, (ख) आभरण (ग) वस्त्र।

(क) पुष्पमाल्य - माला ग्रीवा में धारण किए जाने वाला अलंकरण है। यह वेष्टित, वितत, संघात्य, ग्रथित और प्रलम्बित विधि से ~~पहने~~ पहने जाने योग्य है।

(ख) आभरण - आभूषणो द्वारा शरीर के अलंकार की निम्न विधियाँ हैं - आवेद्य, आरोप्य, बन्धनीय, प्रक्षेप्य आदि।

(ग) वस्त्रविधि - वेष - नाट्य प्रयोग की दृष्टि से वेष तीन प्रकार का है - शुद्ध, विचित्र और मालिन।

Scanned by TapScanner

3) अंगरचना - यह आहार्य अभिनय का तीसरा अंग है। इसके द्वारा आकृति, रूप एवं रंग आदि में परिवर्तन प्रदर्शित किया जाता है। जैसे - यक्ष, देव, किन्नर, दानव आदि के रूपों का प्रदर्शन। अंगरचना में वर्णों का संयोजन पात्रों की मनोदशा के अनुसार के किया जाना चाहिए।

भरत ने अंगरचना के लिए नाना प्रकार के वर्णों और उपवर्णों की चर्चा की है। उनके अनुसार मूल वर्ण चार प्रकार के हैं - सित (सफेद), नील (नीला), पीत (पीला) और रक्त (लाल)। इन चार वर्णों के मेल से अनेक प्रकार के उपवर्णों (मिश्रित रंग) का निर्माण किया जाता है। वर्णों और उपवर्णों के मेल से अनेक प्रकार की मनोहारी, आकर्षक, प्रयोग के अनुकूल छवियाँ प्रकट की जाती हैं।

रंग विधान को भलीभाँति समझ कर देश, जाति, वय के अनुरूप वर्णविन्यास करना नाट्य-प्रयोग को प्रभावी बनाता है। जैसे जन्म लेने वाला जीव अपने पूर्व देह के स्वभाव को छोड़कर दूसरा शरीर और उसके स्वभाव को धारण करता है, उसी प्रकार अभिनेता देवता, दानव और मानव आदि के स्वभाव के अनुसार वर्णों के रंग से अपने वर्ण का आच्छादन करके दर्शकों के समक्ष प्रकट होना चाहिए।

Scanned by TapScanner

आदार्य अभिनय में देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष राक्षस, पन्नग, सर्प और अखिल जीवधारी मनुष्य के समान प्राणी समझे जाते हैं। इनके अतिरिक्त नदियां, पर्वत, समुद्र, वाहन तथा अनेक प्रकार के शास्त्रों को भी प्राणिवर्ग में सम्मिलित किया गया है। अर्थात् अंगरचना के योग से नाट्य में इन्हें सजीव रूप से प्रस्तुत किया जाता है जैसे उत्तररामचरित में तूम्बकास्त्र का वर्णन सजीववत् किया गया है।

अंगरचना के अंतर्गत पुरुषों के देश, काल, आयु, श्मश्रुकर्म (दाढ़ी-मूँछ) की विवेचना भी की गई है। यह चार प्रकार की है — 1) शुद्ध, 2) विचित्र, 3) श्याम, 4) रोमश।

5) संजीव - आदार्य अभिनय में यह चौथा अंग है। इसमें अपद (बिना पैर वाले) द्विपद (दो पैर वाले), चतुष्पद (चार पैरों वाले) जीव जन्तुओं को रंगमंच पर उतारने की विधि का निर्देश किया गया है। सर्प अपद जीव है, पक्षी द्विपद है तथा ग्राम्य (कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा आदि) और आरण्यक हाथी, सिंह, व्याघ्र आदि चतुष्पद जीव हैं।

रंगमंच पर उक्त जीवों की अवतारणा न तो सम्भव है और न ही उपादेय। रंगमंच पर इनकी उपस्थिति भयदायक है और नाटक में तो विघ्न करती है

Scanned by TapScanner

साथ ही भावों का भी संकट उपस्थित हो सकता है। इसलिए संजीवविधि से जीवजन्तुओं के कृत्रिम सारूप्य की रचना का विधान अनुमत है।

संजीव शैली के प्रयोग के लिए भरत पटी या चटी (Mask - खांचा - साँचा) की कल्पना करते हैं। यह एक प्रकार का आवरण या आच्छादन है, जिसे आवश्यकतानुसार विविध प्राणियों की रूप रचना के लिए पात्र अपने सिर से पैर तक ढक कर अपने नट रूप को छिपा लेता है और पटी अनुसार आकारानुरूप चेष्टा करता है।

इस प्रकार अनुकीर्तिन रूप नाट्य में ग्रहण की जाने वाली उपकरणात्मक सामग्री अनुकृति और सादृश्य परक होनी चाहिए, यथार्थ नहीं। इनकी सहायता से कुशल अभिनेता अपनी प्रभावी आंगिक चेष्टाओं, वाचिक अभिनय और सात्विक चेष्टाओं के प्रदर्शन से नाट्य प्रयोग को जीवन्तता प्रदान करने में सफल रहता है।

Harsha Kumari

Scanned by TapScanner